लघु कथाएँ

सीख (डॉ• सुनील बहल)

स्वाभिमान (कमलेश भारतीय)

मेहनत का करिश्मा (बिमला देवी)

RESPECT
RESPECT
RESPECT
सबसे कीमती
है
आत्म सम्मान

हिम्मत करने वालो की हार नहीं होती
लहरों से डर कर नैया पार नहीं होती।

यह है भारतीय संस्कृति

जिस की झलक इन लघुकथाओं में पाई जाती है---

श्रवण कुमार की तस्वीर हमें सिखाती है कि माता पिता कोई बोझ नहीं होते। परन्तु यह सीख आज लोगों के मन-मस्तिष्क से मिटती जा रही है।इसी सीख को फिर से जागृत करने के लिए **लेखक डॉ॰ सुनील बहल जी** ने एक लघुकथा प्रस्तुत की है, जिसका शीर्षक है-----

सीख

इस कहानी में रमेश और सुरेश नामक दो भाई हैं।माँ आठ महीने से रमेश के साथ रह रही थी।पति पत्नी इस सोच में थे कि सुरेश ने तो कभी खबर ही नहीं ली।इतने में सुरेश आ गया।दोनों भाइयों में माँ को रखने के प्रति बात हुई।सुरेश न तो पैसे देना चाहता था,न ही अपनी पत्नी के कारण माँ को अपने घर ले जा सकता था।दोनों गाँव के मुखिया के पास गये और चौधरी साहब को हल निकालने के लिए कहा।चौधरी साहब के शब्दों ने उन्हें सही रास्ता दिखा दिया।ये शब्द इस प्रकार थे-------------------**सच बत तो यह है कि मैंने अपनी माँ को अपने पास नहीं रखा हुआ बल्कि मैं अपनी माँ के पास तब से रह रहा हूँ जब से मेरा जन्म हुआ है।यह मेरा सौभाग्य है कि मैं अपनी माँ के पास रहता हूँ।**

इस लघुकथा का मूल मन्त्र

मातृ देवो भव पितृ देवो भव।

अर्थात्

माता- पिता प्रत्यक्ष देवता हैं।

स्वाभिमान

“जो न पढाया जा सके

न दिखाया जा सके

यह वो भाव है जो

महसूस कराया जा सके

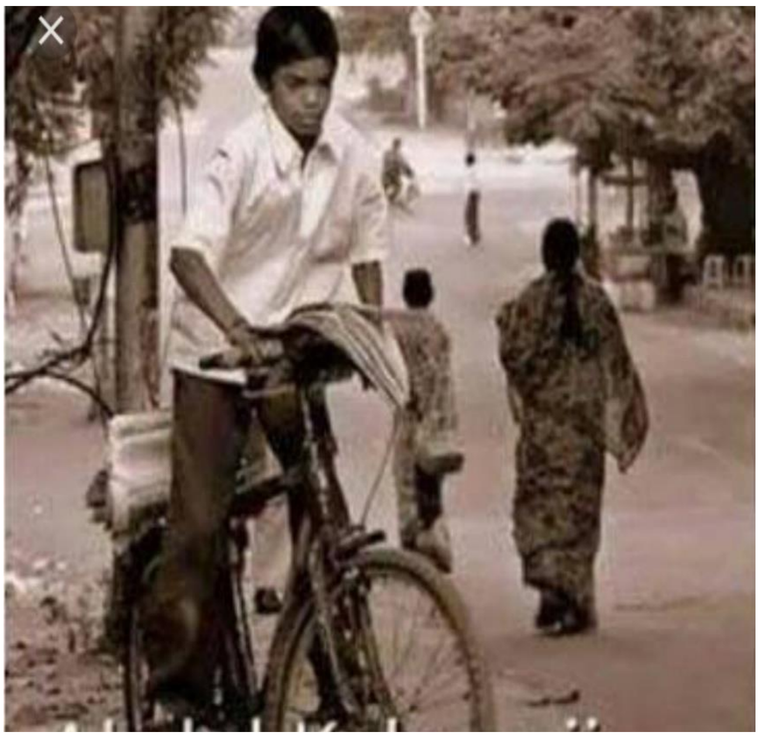

लेखक **कमलेश भारतीय जी** ने अखबार बेचने वाले छोटे से लड़के की कहानी के द्वारा स्वाभिमान की भावना को बच्चों में जागृत करने का भरपूर प्रयास किया है। नौवीं कक्षा में पढ़नेवाला यह लड़का कंपकंपाती सर्दी में जब अखबार बांटने आता है तो लेखक सहायता के रूप में कुछ नोटबुक्स देना चाहता है। लड़के ने यह कहकर मना कर दिया कि वह खुद कापियाँ ले सकता है। जो नहीं ले सकते,ये कापियाँ उनको दे दी जाएं।

मेहनत का करिश्मा

इस कहानी का नाम चाहे **मेहनत का करिश्मा** है लेकिन इसके माध्यम से लेखिका **बिमला देवी** ने न केवल मेहनत का महत्व बताया है अपितु मेहनत के साथ-साथ **बच्चे का मां के प्रति लगाव,अपनी भूल को सुधारने की हिम्मत और हस्तकला के महत्व पर भी प्रकाश डाला है।** एक छोटा सा बच्चा चुन्नू दूसरे बच्चों को पटाखे चलाते हुए देख कर पटाखे लाने के लिए मां की

अलमारी से पैसों की चोरी कर लेता है।जब बीमार मां की दवाई के लिए पैसों की जरूरत पड़ती है तो उसे अपनी का भूल एहसास होता है।अपनी भूल को सुधारने के लिए और अपनी मां को बचाने के लिए सतरंगी कागज के फूल (जो स्कूल में कलाकार ने बनाने सिखाए थे)बनाकर बेचता है।उसके सभी फूल **एक सौ सात रुपये** में बिक जाते हैं वह अपनी मां की दवाई लेकर घर पहुंचता है और अपनी माँ की जान बचा लेता है।

		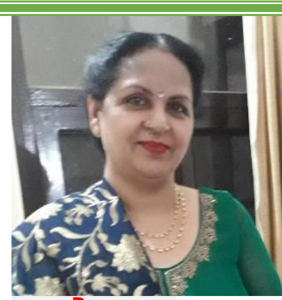	
मार्गदर्शक : डॉ. सुनील बहल, स्टेट रिसोर्स पर्सन (हिंदी व पंजाबी)	**प्रस्तुति : सिम्मी, वैदिक गर्ल्ज़ सीनियर सैकण्डरी स्कूल, अमृतसर**	**संशोधन : सरिता शर्मा, को-ओरडिनेटर एडिड स्कूल, अमृतसर**	**संयोजक : राजन, डीएम, हिन्दी, अमृतसर**